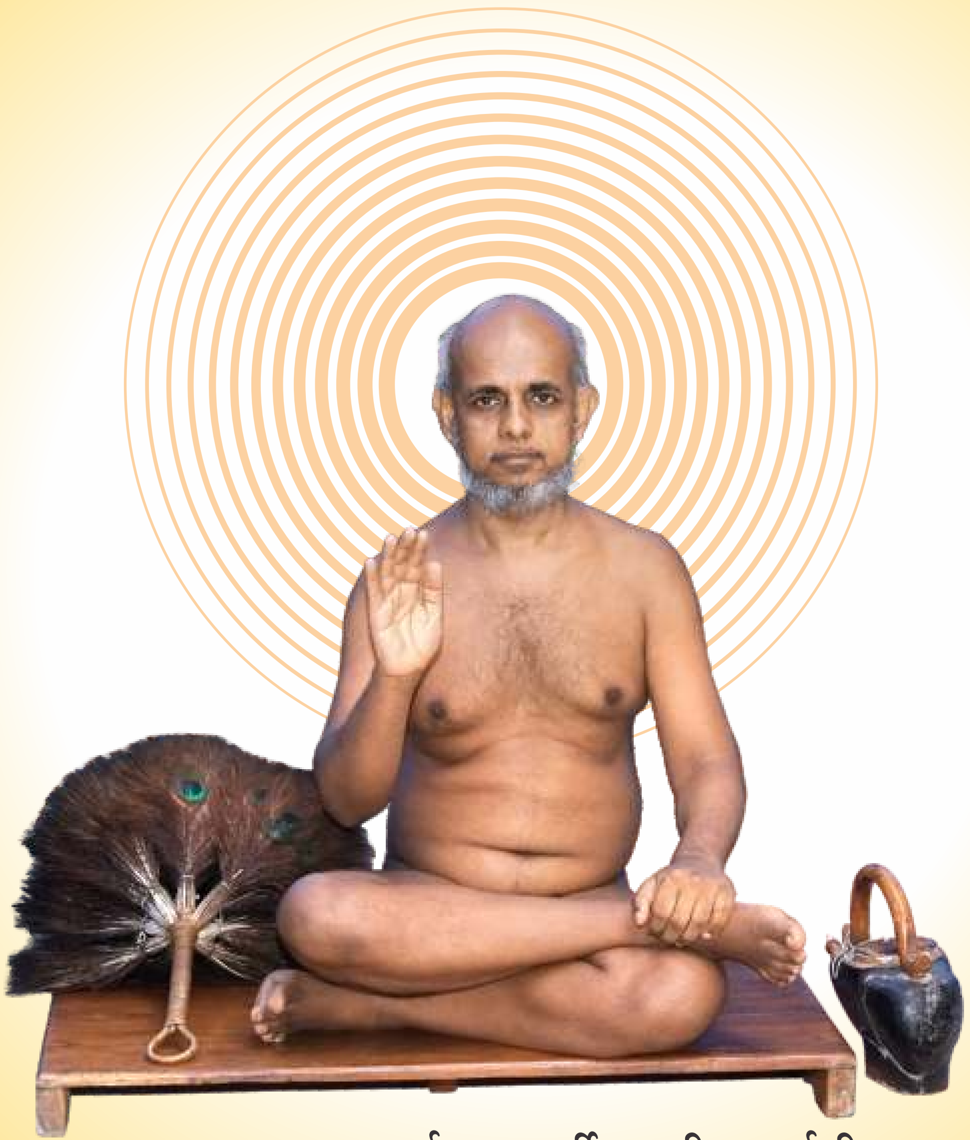

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

दशलक्षण विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी-आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

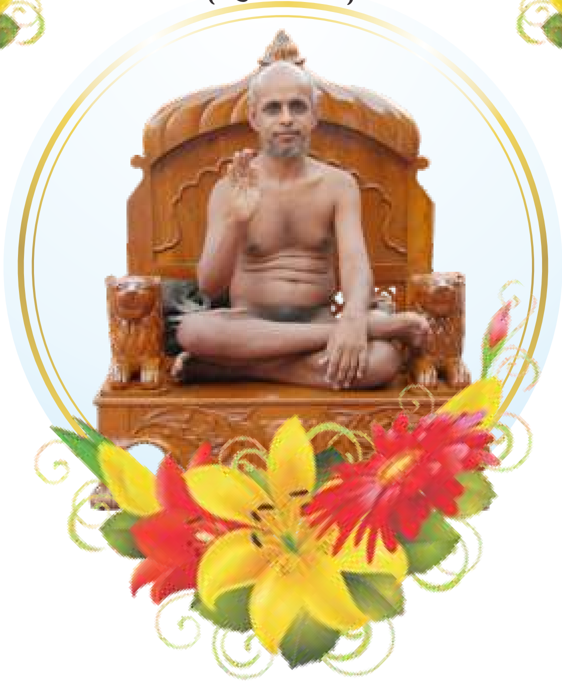

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 312
ISBN 978-93-80353-27-2

दशलक्षण विधान

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

द्वितीय संस्करण	वीर नि. सं. 2538, श्रावण कृ. एकम्	मूल्य
2200 प्रतियाँ	4 जुलाई 2012	40/-रु.
	वीर शासन जयंती पर्व	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण, सन् 2010—1100 प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

आचार्यों ने ठीक कहा है–

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारन।
इह परमामृत जन्म जरा भय मृत्यु निवारन।।

वर्तमान में मति श्रुतावधि आदि पाँच ज्ञानों में मात्र दो ही ज्ञान हैं और उस ज्ञान का तीव्र क्षयोपशम होने से ग्रंथ पुराणों के आलोढन आदि से जब उसका निष्कर्ष स्पष्टतया हो जाता है तब मन में एक विशेष ही आल्हाद प्रकट होता है और वही आल्हाद भव्य जीवों को मुक्तिपथ की ओर अग्रसर करने में निमित्त कारण बनता है।

भौतिकवादी इस युग में समयाभाव की पीड़ा से ग्रसित जीवों को सरल, सरस स्पष्ट और परिमार्जित भाषा शैली में आगम का गूढ़ ज्ञान प्रदान करने वाली परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का यह जग युगों-युगों तक ऋणी रहेगा जिन्होंने अनेकों गद्य, पद्य रचनाओं द्वारा साहित्य जगत पर महान उपकार किया है और उसी ही क्रम में उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का भी साहित्य जगत चिरऋणी रहेगा, जिन्होंने अपनी गुरु की आज्ञा प्राप्तकर समय-समय पर अनेक जनोपयोगी रचनाओं द्वारा भक्तों के लिए भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है।

प्रस्तुत ''दशलक्षण विधान'' भी उनकी अनेक कृतियों में से एक सारभूत कृति है जिसके माध्यम से दश धर्मों को पूजन संगीत के माध्यम से करके भक्त भक्तिगंगा में तो अवगाहन करेगा ही, इसके माध्यम से अपने जीवन को भी अवश्य समुन्नत करेगा।

इस विधान को करके आप सभी अपने ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि करें, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

सिद्धिः प्रासादनिःश्रेणी, पंक्तिवत् भव्यदेहिनाम्।
दशलक्षणधर्मोऽयं, नित्यं चित्तं पुनातु नः।।

अर्थात् भव्य जीवों के सिद्धिमहल पर चढ़ने के लिए यह दशलक्षण धर्म सीढ़ियों की पंक्ति के समान है, वह हमारे चित्त को पवित्र करे।

जैनधर्म में दशलक्षण पर्व का अत्यधिक महत्त्व है। यूँ तो यह अनादि पर्व चैत्र, भाद्रपद और माघ महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी से चतुर्दशी तक वर्ष में तीन बार आता है परन्तु वर्तमान में भाद्रपद मास में ही यह विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दशलक्षण पर्व का अपरनाम पर्यूषण पर्व भी है। पर्यूषण का अर्थ है–स्वयं के निकट होना, परिधि से केन्द्र की ओर लौटना–परिसमन्तात् ऊष्णं निवासः सर्व जीवैः, सर्व मैत्री भावनेति पर्यूषणम्।।'' चारों ओर से अपनी कषाय को समाप्त करने के लिए, चारों ओर से मैत्री को जन्म देने के लिए, चारों ओर से अपने भीतर वात्सल्य को प्रदर्शित करने के लिए, चारों ओर से अपने जीवन में धर्म प्रकट करने के लिए हम पर्यूषण पर्व को स्वीकार करते हैं। सभी अवगुणों को दूर कर अंतर्ज्योति को जगाने की साधना में संलग्न रहना ही पर्यूषण है। यह पर्व भोग का नहीं बल्कि आत्मशांति का प्रतीक है। यह त्याग और तपस्या का पर्व है। इस पर्व में आत्मकल्याण की जो शिक्षा प्राप्त होती है, उसे यदि निष्ठापूर्वक जीवन में उतारा जाये, तो मानव हृदय परिवर्तन सचमुच संभव है।

प–पापों का

र–रग-रग से

व–विसर्जन करना, वह कहलाता है पर्व और उन पर्वों की ऊष्णता हममें प्रविष्ट हो, वह है पर्यूषण। इस पर्वराज में मंदिरों में सामूहिक पूजन, सरस्वती आराधना, दशधर्म प्रवचन एवं तत्त्वार्थसूत्र वाचन के साथ ही दश दिनों तक बड़े-बड़े विधानों को करने की परम्परा प्रचलन में है।

हम पुण्यशाली हैं कि तीर्थंकर परमदेव की कल्याणकारी ऊँकारमयी दिव्यध्वनि को गणधर भगवन्तों ने गूँथकर द्वादशांग की रचना की और वही प्रवाहमान रूप से अनेक पूर्वाचार्यों द्वारा शास्त्ररूप से निबद्ध होकर हम सबके कल्याणार्थ उपलब्ध है। वर्तमान में उसी दिव्य देशना रूप आगम ग्रंथों को आधार बनाकर संसारी जीवों के कल्याणार्थ और अधिक सरल रूप में प्रवचन, ग्रंथरचना आदि के माध्यम से प्रदान

करने का पावन कार्य हमारे परम स्तुत्य साधुगण कर रहे हैं जिनमें सर्वोपरि नाम आता है चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा की सुरभित कलिका के रूप में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का। आगम को अपना प्राण मानने वाली पूज्य माताजी ने अब तक 275 से भी अधिक जनोपयोगी ग्रंथों की रचना कर भव्य जीवों के हितार्थ साहित्य के क्षेत्र में जिनवाणी माता की अहर्निश सेवा की है।

उन्हीं परम पूज्यनीय माताजी की विदुषी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी एक ऐसी सिद्धहस्त लेखिका हैं जिन्होंने अर्जुन एवं चन्द्रगुप्त जैसा गुरुभक्ति का आदर्श प्रस्तुत करते हुए धर्मसाधना के साथ-साथ गुरुआज्ञा से अनेकों कृतियों की रचना की है। उनकी प्रत्येक गद्य एवं पद्य रचनाएँ जनमानस में नई स्फूर्ति का संचार करते हुए सुगमता से जैनधर्म का मर्म सुधी पाठकों एवं भव्य प्राणियों को समझाती हैं, पद्यलेखन की श्रृंखला में उनकी नूतन कृति यह ''दशलक्षण विधान'' है जिसमें दशों धर्मों का सविस्तार वर्णन है और पूजक इसकी एक-एक पंक्ति को हृदयंगम कर अपने अंदर आए अवगुणों को सहज ही दूर कर सकता है। वास्तव में उनकी लेखनी चलती नहीं अपितु बोलती है और दिग्भ्रमित प्राणी को मुक्तिमार्ग पर अग्रसर करती है। जीवन के प्रत्येक क्षण को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने वाली ऐसी पूज्यनीय माताजी के जीवन का प्रत्येक क्षण मोक्षमार्गोन्मुख प्राणी के लिए अनुकरणीय, अभिवन्दनीय एवं स्तुत्य है।

इस नवरचित पूजा विधान में कुल 11 पूजाएँ हैं, जिसमें प्रथम समुच्चय पूजन है, द्वितीय उत्तम क्षमा धर्म की पूजा में 15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, तृतीय उत्तम मार्दव धर्म की पूजन में 12 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, चतुर्थ उत्तम आर्जव धर्म की पूजा में 16 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पाँचवीं उत्तम सत्य धर्म की पूजा में 15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, छठी उत्तम शौच धर्म की पूजा में 16 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, सातवीं उत्तम संयम धर्म की पूजा में 21 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, आठवीं उत्तम तप धर्म की में 23 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, नवमीं उत्तम त्याग धर्म की पूजा में 10 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, दशवीं उत्तम आकिंचन्य धर्म की पूजा में 15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य और ग्यारहवीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा में 22 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य है। इस प्रकार कुल 165 अर्घ्य एवं 10 पूर्णार्घ्य हैं। अंत में गागर में सागर के समान सारभूत समुच्चय जयमाला है।

इस सुन्दर एवं मुक्तिप्रदायक विधान को करने, कराने एवं सुनने वाले सभी भव्य जीव शीघ्र ही अपने जीवन में उन दश धर्मों को अवतरित कर कर्मश्रृँखला को काटकर मुक्तिरूपी अंगना का वरण करने में सक्षम होवें, यही मेरी मंगलकामना है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

धर्म का स्वरूप बताते हुए आचार्यों ने कहा है—''उत्तमे सुखे धरति इति धर्मः'' अर्थात् जो संसारी प्राणियों को दुःखों से निकालकर उत्तम सुख में पहुँचा दे, उसे धर्म कहते हैं तथा प्रत्येक वर्ष भाद्रपद शुक्ला पंचमी से पूर्णिमा तक पालन किए जाने वाले धर्मों को ''दशधर्म'' या ''दशलक्षण धर्म'' यह संज्ञा दी गई है।

स्वामी कार्तिकेय ने कहा है—

''सो चियदहप्पयारो खमाहिभावेहिं सुख सारेहिं ते।
पुण भणिज्जमाणा मुणियव्वा परमभत्तीस।।''

अर्थात् वह धर्म उत्तम क्षमादि के भेद से दस प्रकार का है और सच्चे सुख को देने वाला है तथा सुख स्वरूप है। यह उत्तम क्षमादि धर्म परम भक्तिपूर्वक मनन करने योग्य है।

जिस प्रकार मनुष्यों में राजा श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार सभी महीनों में यह भाद्रपद का महीन सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यह अनेक व्रतों की खान है और धर्म का प्रधान कारण है। आचार्यों ने इन दश धर्मों को कल्पवृक्ष की उपमा दी है जो मनवांछित फल प्रदान करने वाले हैं।

प्रत्येक जिनधर्मानुयायी भव्य प्राणी भाद्रपद मास में दश दिनों तक विशेष रूप से जिनदर्शन, पूजन, त्याग, तपस्या आदि करते हैं और अपने कर्मों की निर्जरा कर महान पुण्य का संचय करते हैं। काफी समय से मेरे पास अनेक भक्त आकर यह मांग करते थे कि माताजी! आप अपनी लेखनी से दशलक्षण विधान भी लिखकर हमें प्रदान करेंअतः मेरी प्रेरणा प्राप्तकर मेरी सुयोग्य शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने मेरे ही आगमोक्त मनोभावों को अपनी परिष्कृत लेखनी से अति सुन्दर रूप मेंमात्र 15 दिन की अल्पावधि में लिखकर भक्तों के लिए प्रदान कर दिया, वास्तव में आर्यिका चन्दनामती जी का कर्त्तव्यनिष्ठ शिष्यत्व, हृदयग्राह्य जनोपयोगी आगमोक्त लेखनी, गुरुआज्ञा में सतत लीनता और प्रभावक वाणी आदि गुण आज के प्रत्येक शिष्य के लिए अनुकरणीय और ग्रहणीय है। वे इसी प्रकार सदैव देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए क्रम परम्परा से शीघ्र ही आत्मोन्नति के चरम शिखर अर्थात् शाश्वत् सुख मोक्षप्राप्ति की अभिलाषा को पूर्ण करें, यही उनके लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है और यह विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के मनोरथों की सिद्धि कर उनकी आत्मा को परम पावन बनाने में निमित्तभूत बने, यही मंगल आशीर्वाद है।

विधान रचना की प्रेरणास्रोत राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है—वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

60 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितनेही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद् उपाधि प्रदान की। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की ज्ञानशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं तथा आज भी हो रहे हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर ''हीरक जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूपमें मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खबरावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले), गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।

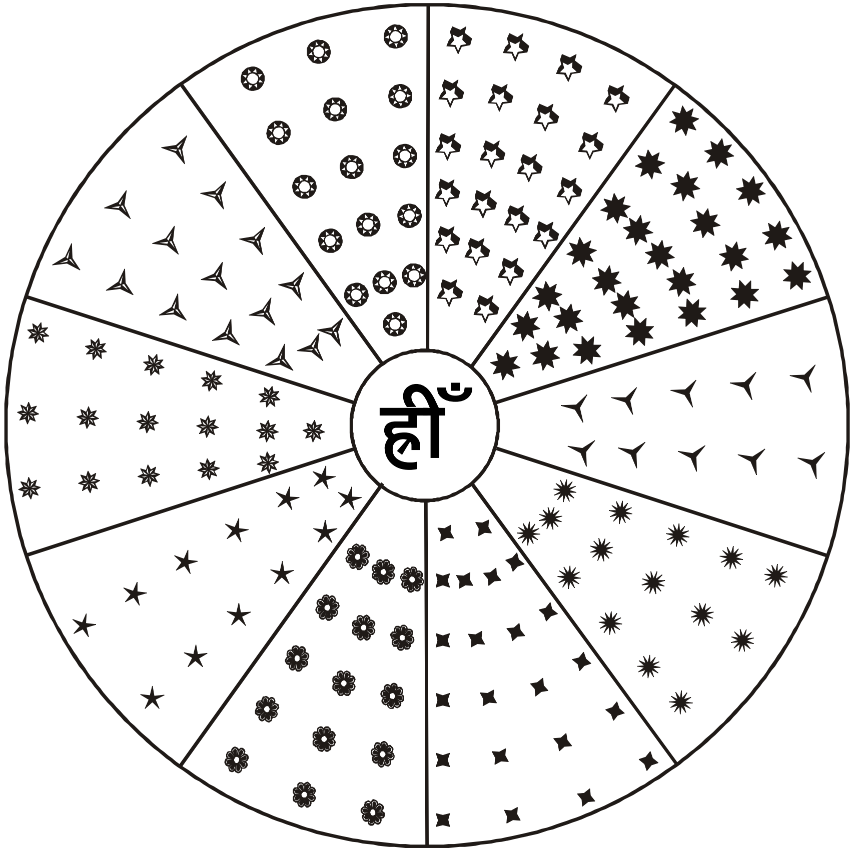

पहले कोष्ठक में	–15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
दूसरे कोष्ठक में	–12 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
तीसरे कोष्ठक में	–16 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
चौथे कोष्ठक में	–15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
पाँचवे कोष्ठक में	–16 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
छठे कोष्ठक में	–21 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
सातवें कोष्ठक में	–23 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
आठवें कोष्ठक में	–10 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
नवमें कोष्ठक में	–15 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
दशवें कोष्ठक में	–22 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य

कुल –165 अर्घ्य एवं 10 पूर्णार्घ्य

विषयानुक्रमणिका

पूजा	पृष्ठ
1. समुच्चय पूजा	3
2. उत्तम क्षमा धर्म पूजा	7
3. उत्तम मार्दव धर्म पूजा	16
4. उत्तम आर्जव धर्म पूजा	23
5. उत्तम सत्य धर्म पूजा	28
6. उत्तम शौच धर्म पूजा	36
7. उत्तम संयम धर्म पूजा	43
8. उत्तम तप धर्म पूजा	51
9. उत्तम त्याग धर्म पूजा	59
10. उत्तम आकिञ्चन्य धर्म पूजा	67
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा	74
12. प्रशस्ति	87
13. आरती	88

नवदेवता पूजन

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

—गीता छन्द—

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री दशलक्षण विधान प्रारंभ

मंगलाचरण

–शेर छंद–

जैवंत हो अरिहंत सिद्ध सूरि जगत में।
जैवंत उपाध्याय सर्वसाधु जगत में।।
जैवन्त हो जिनधर्म जिनागम त्रिलोक में।
जैवन्त हो जिनचैत्य जिनालय त्रिलोक में।।1।।

मैं इन सभी नवदेवताओं को नमन करके।
चौबीस जिनवरों को नमूँ भाव भक्ति से।।
चारित्रचक्रवर्ती शांतिसिंधु को नमूँ।
उनके ही प्रथम शिष्य वीरसिंधु को नमूँ।।2।।

आचार्य वीरसिंधु की शिष्या हैं ज्ञानमति।
इस बीसवीं सदी की ये हैं प्रथम बालसति।।

इनके चरण में नमन कर दशधर्म को नमूँ।
उत्तम क्षमादि दशों धर्म को हृदय धरूँ।।3।।

दशधर्म का मण्डल बनाके अर्चना करूँ।
दश-दश वलय में अर्घ्य चढ़ा वंदना करूँ।।
इन अर्घ्यों के माध्यम से पद अनर्घ्य मैं वरूँ।
संसार भ्रमण नाश कर शिवांगना वरूँ।।4।।

दशधर्मों में प्रत्येक का महत्व है अपना।
सार्थक न हो सकता जनम इन धर्मों के बिना।।
मण्डल पे विराजे प्रभू की वंदना करूँ।
पूजन के शुभारंभ में पुष्पाञ्जली करूँ।।5।।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(पूजा नं.-1)

समुच्चय पूजा

–दोहा–

पर्व अनादि अनंत है, दशलक्षणमय धर्म।
होता भव का अंत है, करें यदी शुभकर्म।।1।।
धर्म नाम से हैं क्षमा, मार्दव आर्जव भाव।
शौच सत्य संयम तथा, तप अरु त्याग स्वभाव।।2।।
आकिंचन्य व ब्रह्मचर्य, हैं धर्मों के सार।
इनकी पूजन से करूँ, मुक्तिपंथ साकार।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (दोहा)–

गंग नदी का नीर है, जग में शुद्ध पवित्र।
दश धर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

काश्मीरी केशर घिसी, पूजन हेतु पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल अखण्ड ले, धोकर किया पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल चुने निज हाथ से, विविध प्रकार पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन विविध बनाय के, लाऊँ थाल पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक का थाल ले, आरति करूँ पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपघटों की अग्नि में, खेऊँ धूप पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध फलों का थाल भर, अर्पूं नाथ पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य 'चंदनामति' लिया, स्वर्णिम थाल पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन धारी से करूँ, शांतीधार पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों को भरकर करूँ, पुष्पांजली पवित्र।
दशधर्मों की अर्चना, से हो पावन चित्त।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यो नमः।

जयमाला

तर्ज–माई रे माई..............

दशधर्मों की पूजन में, जयमाल सभी मिल गाएँ।
अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।टेक.।।

उत्तम क्षमा धर्म पावन कर, शत्रु को मित्र बनाना।
उत्तम मार्दव धर्म के द्वारा, विनय भाव अपनाना।।
उत्तम आर्जव धर्म धार कर.............
उत्तम आर्जव धर्म धार कर, मन को सरल बनाएँ।
अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।1।।

उत्तम सत्य धर्म का सेवन, वचनसिद्धि करवाता।
उत्तम शौच धर्म मन-वच-तन, को भी शुद्ध बनाता।।
उत्तम संयम धर्म के द्वारा...........
उत्तम संयम धर्म के द्वारा, जीवन उच्च बनाएँ।
अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।2।।

उत्तम तपो धर्म से कुछ, तप की शिक्षा मिलती है।
उत्तम त्याग धर्म से मन की, ज्ञानकली खिलती है।।
चार दान देकर गुरुओं को..........
चार दान देकर गुरुओं को, त्याग धर्म अपनाएँ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।3।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म, परिग्रह का त्याग कराता।
जब तक पूर्ण त्याग नहिं हो, परिग्रहप्रमाण करवाता।।
श्रद्धायुत इसका पालन कर..........
श्रद्धायुत इसका पालन कर, अणुव्रती बन जाएं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।4।।

उत्तम ब्रह्मचर्य पालन कर, शीलव्रती बनना है।
सब धर्मों का सार चन्दना-मती प्राप्त करना है।।
इसीलिए दशलक्षण पर्व में.........

इसीलिए दशलक्षण पर्व में, पूजन करने आए।
अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।5।।

मोक्षमहल की सीढ़ी ये, दशधर्म कहे जाते हैं।
इन पर चढ़कर भव्यप्राणि शाश्वत सुख को पाते हैं।।
सिद्धशिला के स्वामी बनकर...........
सिद्धशिला के स्वामी बनकर, पूजन का फल पाएँ।
अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए।।
जय हो दशों धर्म की जय, जय हो दशों धर्म की जय.।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवासत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-2)

उत्तम क्षमाधर्म पूजा

–स्थापना –

तर्ज –रोम-रोम से..............

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम-जनम.।।टेक.।।

उत्तम क्षमा मुनीजन ही, उत्कृष्टरूप से धरते।
हर विपरीत क्षणों में वे, नहिं क्रोध किसी पर करते।।
इसीलिए मुनियों की पूजा, करता है जग सारा।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।
हाँ दर्श तुम्हारा।।1।।

मैं भी क्षमाधर्म की पूजा करके मन में ध्याऊँ।
सब जीवों से मैत्री करके क्षमा धर्म अपनाऊँ।।
आह्वानन स्थापन कर हो, पावन हृदय हमारा।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।
हाँ दर्श तुम्हारा।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।

क्षीरोदधि के शीतल जल से, स्वर्ण कलश भर लाया।
आत्मशांति के लिए प्रभू पद धारा करना चाहा।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।

सुरभि कर्पूर सुमिश्रित चंदन को घिस कर मैं लाया।
मन शीतल करने मैं प्रभु पद, चर्चन करने आया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।

मोती जैसे श्वेत धवल, अक्षत धोकर मैं लाया।
पद अखंड पाने हेतू, मैं पुंज चढ़ाने आया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।

कल्पवृक्ष के पुष्पों की, माला मैंने तैयार किया।
कामबाण के नाश हेतु, प्रभु सम्मुख उसे चढ़ाय दिया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।

रस पूरित मिष्टान्न थाल, भर कर प्रभुवर मैं लाया।
हो मेरा क्षुधरोग विनाशन, यह अभिलाषा लाया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।
मणिदीपक थाली में रख, जिनवर की आरति कर लूँ।
नष्ट मोहनी कर्म मेरा हो, भव आरत मैं हर लूँ।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।
अष्टगंध की धूप धूपघट, में मैं दहन करूँ प्रभु!
कर्म दहन हो जावें मेरे, भाव हृदय में हैं प्रभु!।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।
श्रीफल अरु बादाम सुपारी, थाली में भर लाया।
मोक्षमहाफल पाने हेतु, जिनवर निकट चढ़ाया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा। हाँ दर्श तुम्हारा........
उत्तम क्षमा का मिल जावे, बस मुझको एक सहारा।। जनम.जनम.।।
जल चंदन आदिक आठों, द्रव्यों का थाल सजाया।
फल अनर्घ्य ''चंदनामती'' पाने को अर्घ्य चढ़ाया।।
दशलक्षण का प्रथम धर्म है, उत्तम क्षमा निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **कंचन झारी में भरा, गंग नदी का नीर।**
शांतीधारा से मेरी, मिट जावे भव पीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों के उद्यान से, चुन चुन पुष्प मंगाय।
पुष्पांजलि को अर्पते, हृदय पुष्प खिल जाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (15 अर्घ्य)

दोहा – **प्राणिमात्र के प्रति रहे, सदा प्रेम का भाव।**
मण्डल पर पुष्पाञ्जलि, करूँ क्षमा मन धार।।

इति मण्डलस्योपरि प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज –चन्दाप्रभु के दर्शन करने सोनागिरि...........

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
पाप उदय से पृथिवीकायिक, जीव शरीर मिला जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।1।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
जलकायिक स्थावर में, एकेन्द्रिय काय मिली जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुःख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायिकस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
अग्निकाय स्थावर में, एकेन्द्रिय काय मिली जिनको।
उनकी रक्षा कर मैं चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।3।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
वायुकाय स्थावर में, एकेन्द्रियकाय मिली जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुःख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
काय वनस्पति स्थावर, एकेन्द्रिय जन्म मिला जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुःख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।5।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
पाँचों स्थावर में बादर, सूक्ष्म शरीर मिला जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।

इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मबादरभेदसमन्वितपंचस्थावरजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमा-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
दो इंद्रिय में लट-कृमि-शंखादिक में जन्म मिला जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।7।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
त्रय इन्द्रिय में चींटी खटमल, बिच्छू आदि धरा तन जो।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।8।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
मक्खी मच्छर भ्रमर ततैया, चउ इंद्रिय वाले तनु जो।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।9।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
पंचेन्द्रिय मनरहित असंज्ञी, जीव में जन्म मिला जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।

इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।10।।

ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।

शुभ कर्मोदय से संज्ञी, पंचेन्द्रिय काय मिली जिनको।
उनकी रक्षा कर यह चाहूँ, कभी न दूँ मैं दुख उनको।।
इस परिरक्षण भाव से उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।11।।

ॐ ह्रीं संज्ञीपंचेन्द्रियजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।

पंचेन्द्रिय में भी पापोदय, से नारक पर्याय मिली।
वहाँ तीव्र दुःखों के कारण, क्षण भर शांती नहीं मिली।।
वह गति प्राप्त न करूँ कभी, ऐसा शुभ भाव बनाना है।
उन पर दया भावयुत उत्तम, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।।12।।

ॐ ह्रीं नारकीजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।

नर तन पाकर भी जो प्राणी, लिप्त कषायों में रहते।
मुनिजन उनको बोधिलाभ, देते हैं नित करूणा करके।।
सदुपयोग कर मनुष जनम का, सार्थक उसे बनाना है।
दुखीजनों पर दया भाव रख क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।।13।।

ॐ ह्रीं मनुष्यजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।

चार भेद युत देव योनि में, जन्म अनेकों बार हुआ।
शारीरिक सुख मिला किन्तु, संताप मानसिक बहुत सहा।।
इसीलिए उन देवों पर भी, दया भाव अपनाना है।
सम्यग्दर्शन सहित मिले पद, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।।14।।

ॐ ह्रीं देवगतिजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
पशुगति के दुःखों को सहकर, किंचित् बोध न पाया है।
ऋषि-मुनियों ने समय-समय पर, उनको भी समझाया है।।
उन तिर्यंचों पर मुझको भी, दया भाव अपनाना है।
शुद्ध भावयुत अष्ट द्रव्य ले, क्षमा को अर्घ्य चढ़ाना है।।15।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

उत्तमक्षमा हृदय में धरकर, क्रोध को दूर भगाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।
त्रस अरु स्थावर सब प्राणी, चारों गति में भ्रमण करें।
उनको देख दया उर लाते, मुनिजन सुगति में गमन करें।।
इन सबकी रक्षा हित मुझको, भी पूर्णार्घ्य चढ़ाना है।
प्राणिमात्र पर दया भाव धर, समता को अपनाना है।।1।।

ॐ ह्रीं त्रसस्थावरसमस्तजीवपरिरक्षणरूपउत्तमक्षमाधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज-आवाज देकर...............

क्षमा धर्म को पूर्ण अर्घ्य चढ़ाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।टेक.।।

न क्रोधी प्रकृति आत्मा की कही है।
वहाँ तो सदा शान्ति सरिता बही है।।
नहीं क्रोध कर अपनी गरिमा घटाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।1।।

हो यदि कोई दुश्मन तुम्हारा जगत में।
उसे जीत सकते हो तुम प्रेम बल से।।
सहनशीलता धैर्य शक्ती बढ़ाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।2।।

प्रभू पार्श्व ने ही क्षमा धर्म पाला।
इसे धार ऋषियों ने उपसर्ग टाला।।
उन्हीं सबके चरणों में मस्तक झुकाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।3।।

करूँ प्रार्थना प्रभु मुझे भी क्षमा दो।
प्रभो! मेरे मन को भी चन्दन बना दो।।
यही भावना ''चन्दनामति'' बनाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।4।।

क्षमा धर्म की पूजा सच्ची वही है।
जहाँ प्राणियों पर दया ही कही है।।
जयमाल में भक्ति के गीत गाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-3)

उत्तम मार्दव धर्म पूजा

–स्थापना (अडिल्ल छंद)–

उत्तम मार्दव धर्म विनय गुण पूर्ण है।
मान कषाय को करता वह निर्मूल है।।
इसकी पूजन करूँ विनय चित लायके।
जिनवर ढिग स्थापन कर लूँ आयके।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

तर्ज–देख तेरे संसार की.........

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
गंगा नदि का जल ले करके।
प्रभु पद में त्रयधारा करके।।
जन्म जरा मृत्यू क्षय करके पाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
काश्मीरी केशर घिस करके।
जिनवर के पद चर्चन करके।।
हो संसार ताप का नाशन पाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
शुभ्र धवल अक्षत ले करके।
मार्दव धर्म की पूजन करके।।
अक्षय पद की प्राप्ती करके पाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
विविध पुष्प की माल बनाऊँ।
मार्दव गुणयुत प्रभु को चढ़ाऊँ।।
कामबाण विध्वंसन करके पाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
सरस मिष्ट पक्वान्न बनाकर।
मार्दव गुणयुत प्रभु को चढ़ाकर।।
क्षुधारोग नाशन करके पा जाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
घृत दीपक का थाल सजाया।
प्रभु आरति कर मन हर्षाया।।
मोह अंधेरा दूर भगा पा जाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
अष्टगंध की धूप बनाकर।
प्रभु सम्मुख अग्नी में जलाकर।।
अष्टकर्म को दहन करूँ पा जाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
विविध फलों का थाल सजाकर।
मार्दव गुणयुत प्रभु को चढ़ाकर।।
मोक्ष महाफल मिल जावे पा जाऊँ सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर।
मार्दव गुणयुत प्रभु को चढ़ाकर।।
पद अनर्घ्य 'चंदनामती' मिल जावे सौख्य महान,
यह है विनय गुणों की खान।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
रत्नत्रय की चाह मुझे है।
त्रयधारा इसलिए करूँ मैं।।
शांतीधारा करके चाहूँ शांती का वरदान,
यह है विनय गुणों की खान।।10।।

शांतये शांतिधारा।

उत्तम मार्दव धर्म की पूजन करो भव्य मन आन,
यह है विनय गुणों की खान।।
पुष्प सदृश महके जग सारा।
पुष्पगुच्छ अर्पूं मैं प्यारा।।
पुष्पांजलि करके मृदु गुण का चाहूँ मैं वरदान,
यह है विनय गुणों की खान।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (12 अर्घ्य)

–दोहा –

पूज्य जनों की विनय से, प्रगटे मार्दव धर्म।
मान नष्ट हो हृदय से, यही धर्म का मर्म।।

इति मण्डलस्योपरि द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा –

नंत चतुष्टय से सहित, हैं अरिहंत जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ नमूँ नत शीश।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागअर्हंतदेवनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगुणों से हैं सहित, सिद्धशिला के ईश।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ नमूँ नत शीश।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तिस गुणयुत सूरि हैं, संघ चतुर्विध ईश।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ नमूँ नत शीश।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपरमेष्ठिनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक पच्चिस गुण सहित, ज्ञानी परम ऋषीश।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ नमूँ नत शीश।।4।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी हैं साधु जो, गुण उनके अठवीस।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ उन्हें नत शीश।।5।।

ॐ ह्रीं श्री साधुपरमेष्ठिनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र जिनराज का, चलता रहे सदैव।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ धर्म नत शीश।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमुख से निकले वचन, हैं जिनआगम देव।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, करूँ जिनागम सेव।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनागमनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने भी जिनबिम्ब हैं, तीन लोक के माहिं।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, सबको नमूँ त्रिकाल।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्यनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितने भी जिनभवन हैं, त्रिभुवन में सुखकार।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ उन्हें त्रयबार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्यालयनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थक्षेत्र इस लोक में, हैं जो जिनवर धाम।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, उनको करूँ प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरादिमहापुरुषाणां गर्भजन्मादिकल्याणकैः पवित्रतीर्थक्षेत्र नमनयुत-मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी अतिशय क्षेत्र हैं, इस धरती पर पूज्य।
अर्घ्य चढ़ाकर विनययुत, नमूँ उन्हें नित पूज्य।।11।।

ॐ ह्रीं समस्तअतिशयक्षेत्रनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर मुनि आदि को, मिला जहाँ शिवधाम।
सिद्धक्षेत्र उन तीर्थ को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।12।।

ॐ ह्रीं समस्तसिद्धक्षेत्रनमनयुतमार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

मृदु भावों से ही उत्तम मार्दव धर्म प्रगट होता मन में।
तब मन वच तन से विनय भाव प्रगटित हो जाता हर मन में।।
तीनों लोकों के परमपूज्य नवदेवों को वन्दन करके।
पूर्णार्घ्य समर्पण करूँ विनत भावों से उन्हें नमन करके।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यस्थितपरमपूज्यनवदेवतानमनयुतमार्दवधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज –बाबुल की दुआएँ...............

दशधर्मों में है उत्तम मार्दव, धर्म जगत में हितकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदुगुण पाऊँ सुखकारी।।टेक.।।

व्यवहार विनय का पालन कर, अपना शिवद्वार प्रशस्त करूँ।
गुणरत्नाकर चउविध संघ का, सत्कार विनय अरु भक्ति करूँ।।
निज स्वाभिमान की रक्षाकर, अभिमान तजूँ जो दुखकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदु गुण पाऊँ सुखकारी।।1।।

कुल जाति ज्ञान बल पूजादिक, मद आठ प्रकार बताए हैं।
जिनको अपनाकर रावण आदिक, ने कितने दुख पाए हैं।।
उत्तममार्दव का स्वाभाविक गुण, मानशत्रु मर्दनकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदु गुण पाऊँ सुखकारी।।2।।

हैं देवशास्त्रगुरु इस जग में, सर्वाधिक पूज्य कहे जाते।
इनके प्रति विनय भावना से, मुक्ती के मारग खुल जाते।।
मार्दव गुण अपनी आत्मा को, सन्मान दिलाता सुखकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदु गुण पाऊँ सुखकारी।।3।।

पाँचों परमेष्ठी नवदेवों के, प्रति हो सदा विनत यह मन।
व्यवहार व निश्चय विनय धार कर, हो जावे तन मन पावन।।
लौकिक एवं परमार्थिक जीवन, बने सदा मंगलकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदु गुण पाऊँ सुखकारी।।4।।

यह धर्म प्रगट कर निज मन में, मुनिवर ही जिनवर बनते हैं।
निज आत्मा की शाश्वत सत्ता, में ही अवगाहन करते हैं।।
''चंदनामती'' यह मार्दव गुण, सबके हि लिए है उपकारी।
जयमाला अर्घ्य समर्पित कर, मैं मृदु गुण पाऊँ सुखकारी।।5।।

उत्तम मार्दव धर्म को, वन्दूँ बारम्बार।
मृदु गुण मन में प्रगट हो, मिले निजातम सार।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-4)

उत्तम आर्जव धर्म पूजा

–अथ स्थापना (अडिल्ल छंद) –

उत्तम आर्जव धर्म सकल सुखकार है।
ऋजु भावों से मिलता पुण्य अपार है।।
मन में उसको धारण कर अर्चन करूँ।
आह्वानन स्थापन कर वंदन करूँ।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (सखी छंद) –

क्षीरोदधि का जल लाऊँ, प्रभु पद में धार कराऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस करके लाऊँ, प्रभु पद में गंध लगाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षत लाऊँ, प्रभु सम्मुख पुंज चढ़ाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माल बनाऊँ, प्रभु सम्मुख उसे चढ़ाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पकवान्न बनाऊँ, प्रभु सम्मुख उसे चढ़ाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक थाल सजाऊँ, प्रभु आरति कर सुख पाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की धूप बनाऊँ, प्रभु सम्मुख दहन कराऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल थाल में लाऊँ, प्रभु सम्मुख उन्हें चढ़ाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

थाली में अर्घ्य सजाऊँ, प्रभु सम्मुख उसे चढ़ाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झारी में जल भर लाऊँ, मैं शांतीधार कराऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।10।।

शांतये शांतिधारा।

अंजलि में पुष्प भराऊँ, पुष्पांजलि कर सुख पाऊँ।
उत्तम आर्जव का अर्चन, करता है मन को पावन।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (16 अर्घ्य)

–सोरठा –

ऋजु गुण प्राप्ती हेतु, आर्जव धर्म यजन करूँ।
कुटिल भाव क्षय हेतु, अर्घ्य चढ़ाय नमन करूँ।।

इति मण्डलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा – **छ्यालिस गुणयुत नाथ को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज।**
आर्जव गुण के हेतु मैं, करूँ सकल पुरुषार्थ।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्त्वारिंशत् गुणसहित जिनचरणनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजु गुणयुत अरिहंत जिन, निश्चित हों शिवनाथ।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअरिहंतपरमेष्ठिनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म जो नष्ट कर, बने सिद्ध भगवान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धशिला के नाथ बन, रहें जो शाश्वत काल।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धशिलास्थितमुक्तात्मनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउसंघनायक सूरि पद, नमन करूँ नत माथ।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीआचार्यपरमेष्ठिनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यों के गुण सरल, करें शिष्य हित सार्थ।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीआचार्यपरमेष्ठिपरोक्षनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठि हैं, ज्ञान गुणों की खान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय गुरुदेव से, मिले मुझे भी ज्ञान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिपरोक्षनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप में निरत, साधु सरल गुणखान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसाधुपरमेष्ठिनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन गुरुओं को नमन कर, लहूँ आत्मगुण खानि।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसाधुपरमेष्ठिपरोक्षनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमुख से निकले वचन, देते सच्चा ज्ञान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनवाणीनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयक्षेत्रों को नमन, कर हों पूरे काम।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीअतिशयक्षेत्रनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धभूमियों के नमन, से हों सिद्ध सब काम।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्रनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनचैत्य को, त्रिकरण करूँ प्रणाम।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअकृत्रिमजिनचैत्यनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम सब जिन चैत्य को, बारम्बार प्रणाम।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीकृत्रिमजिनचैत्यनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी पूज्य स्थान को, नमूँ नमूँ अघ हान।
आर्जव गुण के हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसकलपूज्यस्थलनमनयुत आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –

जो सरल भाव से सभी पूज्य, पुरुषों का आदर करते हैं।
षड्यंत्र कुटिल भावों को तज, ऋजु सरल भाव को धरते हैं।।
उत्तम आर्जव को अर्घ्य चढ़ाकर, निज मन शीतल करते हैं।
'चंदनामती' वे मानव जग में, परमपूज्य पद वरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णऋजुभावद्योतकउत्तमआर्जवधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं उत्तम आर्जवधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज–दिन रात मेरे स्वामी..........

हे नाथ! आपकी मैं, जयमाल आज गाऊँ। जयमाल........
ऋजुता हृदय में लाकर, आर्जव धरम निभाऊँ। आर्जव.....।।टेक.।।

ना जाने क्यों कुटिलता का भाव आ ही जाता।
हे प्रभु! उसे हटा कर समता का भाव लाऊँ।। समता का...।।1।।

माया में फंसके मैंने मानव जनम गंवाया।
अनमोल इस रतन को अब ना गंवाने पाऊँ।। अब ना....।।2।।

यह भी सुना है माया से पशुगती है मिलती।
उस पशुगती में हे प्रभु! अब मैं न जाना चाहूँ।। अब मैं....।।3।।

शायद अनादिकालिक संस्कार संग लगे हैं।
मैं चाहकर भी हे प्रभु! उनसे न छूट पाऊँ।। उनसे न....।।4।।

यह पुण्य कर्म ही जो प्रभु भक्ति अब मिली है।
फिर 'चन्दनामती' मैं, मन में उसे बिठाऊँ।। मन में....।।5।।

यह अष्टद्रव्य लेकर, पूर्णार्घ्य मैं चढ़ाऊँ।
पदवी अनर्घ्य पाकर, जग में पुनः न आऊँ।। जग में.....।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे "चंदनामती" पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-5)

उत्तम सत्य धर्म पूजा

–स्थापना (स्रग्विणी छंद)–

मुक्तिपथ में सदा सत्य की जीत है।
साधुगण गाते सब सत्य के गीत हैं।।
स्वात्महित हेतु है सत्य की अर्चना।
मैं करूँ स्थापना धर्म की वंदना।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (स्रग्विणी छंद)–

नीर गंगा नदी का भरूँ पात्र में।
तापत्रय नाश हेतू करूँ धार मैं।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध कर्पूर मिश्रित घिसा गंध है।
गंध चर्चन करूँ नाथ पद पद्म में।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र तंदुल अखंडित लिया पुंज मैं।
सौख्य अक्षय मिले मैं जजूँ पुंज ले।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद बेला चमेली कुसुम ले लिए।
आत्मसुख हेतु प्रभु पाद में अर्पिये।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस भरे मिष्ट पकवान हैं थाल में।
रोग क्षुध नाश हित अर्पूं नत भाल मैं।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल घृत दीप का ले करूँ आरती।
मोह नश जाय मन में जगे भारती।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले चन्दनादि की दहन मैं करूँ।
कर्म नश जाँय ऐसे कष्ट सहन मैं करूँ।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर बादाम फल थाल ले।
मोक्षफल हेतु अर्पूं विनय भाल मैं।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि अष्टद्रव्य अर्पण करूँ।
'चंदनामती' अर्घ्य को समर्पण करूँ।।

सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ नीर ले भृंग में।
आत्मशांति और सर्वशांति हो विश्व में।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाथ पुष्पांजली मैं करूँ पुष्प ले।
ज्ञान का पुष्प खिल जाय अंतरंग में।।
सत्य उत्तम धरम की करूँ अर्चना।
सत्य व्रत पालकर दुख लहूँ रंच ना।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (15 अर्घ्य)

–सोरठा–

सत्यमेव जयते, सूत्र प्रसिद्ध अनादि से।
उसके पालन हेतु, पुष्पाञ्जलि कर पूजते।।

इति मण्डलस्योपरि चतुर्थवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज–यदि भला किसी का कर न सको................

भगवान! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।

जब क्रोध मुझे आ जाता है, कुछ भान न पाप का हो पाता।
मुख से कितने ही झूठ वचन, निकले उनमें मन खो जाता।।
उस सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं क्रोधातिचाररहित सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
धन आदि लोभ में आ करके, कुछ वचन असत्य निकल जाते।
झूठे वचनों के कारण कितने, अशुभ कर्म हैं बंध जाते।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं लोभातिचाररहित सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
परिजन पुरजन के भय से भी, यदि झूठ वचन बोले मैंने।
उनका कर पश्चाताप आज, वच सत्य का नियम लिया मैंने।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं भयातिचाररहित सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
हँस हँसकर वचनालापों में, कितने असत्य बोले जाते।
पर उनके कटु फल पा करके, कष्टों से रोम सिहर जाते।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं हास्यातिचाररहित सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
जिन आज्ञा में विश्वास न कर, कितने ही झूठ वचन बोले।
जग को ठगने की अभिलाषा से, वचन नहीं अपने तोले।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं जिनाज्ञोलंघनातिचाररहित सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
इस उत्तम सत्य धर्म के हैं, दश भेद कहे जिन आगम में।
उनमें से प्रथम सत्य जनपद, जो बोला जाता जनपद में।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं जनपदसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
रूढ़ीवश जो भी वचन बहुत से, प्राणीजन बोला करते।
उसी बात को संवृत सत्य, नाम से जिनआगम कहते।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं संवृत सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
चित्र काष्ठ आदिक में जो, आकार कल्पना की जाती।
वह स्थापना सत्य नाम की, ही भाषा मानी जाती।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं स्थापनासत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
जिसका जो भी नाम जगत में, है प्रसिद्धि को प्राप्त बहुत।
उसी नाम को नामसत्य से, जाना जाता है बहुश्रुत।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं नामसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
गोरा काला पीला जिसका, जो भी रंग अंग में है।
रूपसत्य उसको जानो जो, जिनवाणी के कथन से है।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।10।।

ॐ ह्रीं रूपसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
किसी वस्तु को किसी अपेक्षा, से छोटी या बड़ी कहें।
उसी कथन का नाम प्रतीतिसत्य गौण या मुख्य कहे।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।11।।

ॐ ह्रीं प्रतीतिसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
नैगमनय से राजा का सुत, भी राजा कहलाता है।
व्यवहारसत्य के नाम से ही, इस बात को जाना जाता है।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।12।।

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
इन्द्र में ऐसी शक्ति है तीनों, लोक पलट कर रख देवे।
शक्ति अपेक्षा इसको संभावना सत्य सब कह देवें।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।13।।

ॐ ह्रीं संभावनासत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
जीव अनादि अनंत किन्तु हम, दृष्टि से उसे न देख सकें।
आगम द्वारा उसे जानकर, भावसत्य कह जान सकें।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।14।।

ॐ ह्रीं भावसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान्! मुझे वह शक्ती दो, मैं सत्यधर्म पालन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।
किसी वस्तु की उपमा देकर, वस्तू की पहचान करें।
उपमा सत्य उसे कहकर, परवस्तू का सम्मान करें।।
अब सत्य धर्म को अर्घ्य चढ़ा, मैं निज मन को पावन कर लूँ।
यदि सत्य महाव्रत पल न सके, तो अणुव्रत ही पालन कर लूँ।।15।।

ॐ ह्रीं उपमासत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

बहुत भेदयुत सत्यधर्म को यह पूर्णार्घ्य समर्पण है।
मन वच तन की शुद्धि सहित इस सत्य धर्म को प्रणमन है।।
हे जिनवर! उत्तम सत्य धरम मेरे मन में भी प्रगटित हो।
बस इसीलिए पूजन करने को आया मन में प्रमुदित हो।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज–झिलमिल सितारों का......

सत्य धरम आराधन होगा, पापों का प्रक्षालन होगा।
इसका पालन वचन सिद्धि का, साधन होगा।। सत्य धरम.।।टेक.।।

जाने कितने झूठ भी मैंने, जनम-जनम में बोले हैं।
स्वार्थसिद्धि के कारण अपने, वचन न मैंने तोले हैं।।
अब उन सबका क्षालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।।सत्य.।।1।।

बहुत से विषकण मिलकर जैसे, अमृत नहिं बन सकते हैं।
कई झूठ मिल कर वैसे ही, सत्य नहीं बन सकते हैं।।
धर्म सदा अमृत सम होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।2।।

साधू उत्तम सत्य वचन को, पूर्णरूप से धरते हैं।
श्रावक भी सच्चाई का, आंशिक पालन कर सकते हैं।।
अतः झूठ वच टालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।3।।

राजा वसु ने झूठ बोलकर, अधोगती को प्राप्त किया।
सत्य बोलने वालों ने सर्वदा ऊर्ध्वगति प्राप्त किया।।
धर्म सदा मन भावन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.।।4।।

अष्टद्रव्य का थाल सजा, पूर्णार्घ्य समर्पण करते हैं।
पूजन से 'चंदनामती' सब, इच्छित फल को वरते हैं।
पूज्य परम पद पावन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।।सत्य.।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-6)

उत्तम शौच धर्म पूजा

तर्ज–कभी राम बनके...........

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।टेक.।।
दश धर्मों में शौच धर्म प्यारा।
आतमा शुद्ध हो जिससे न्यारा।।
आह्वान करने, स्थापन करने, चले आये-मंदिर में चले आए।।1।।

आठों द्रव्यों का थाल सजाया।
धर्म पालन का भाव मन में आया।।
धर्मध्यान करने, कल्याण करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
क्षीर सागर का जल ले करके।
उत्तम शौच धर्म को मन में धरके।।
जलधार करने, त्रय ताप हरने, चले आए-मंदिर में चले आए।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
गंध से करूँ प्रभु पाद चर्चन।
उत्तम शौच धरम का अर्चन।।
भवताप हरने, मन शांत करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
शुभ्र तन्दुल अखण्डित लेकर।
करूँ पूजन मिले अक्षय पद।।
सुख प्राप्त करने, अक्षय धाम वरने, चले आए-मंदिर में चले आए।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
नाना पुष्पों को चुन-चुन के लाए।
कामबाण नाश हेतु चढ़ाए।।
आतमशांति वरने, संयम प्राप्त करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
ताजे व्यंजन बना करके लाए।
क्षुधारोग नाश हित प्रभु चढ़ाए।।
स्वास्थ्य लाभ करने, श्रेष्ठ धाम वरने, चले आए-मंदिर में चले आए।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
स्वर्णथाली में घृतदीप लाए।
आरती मोह तम को नशाए।।
अंधकार हरने, मोह नाश करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
अष्टगंध की धूप जलाकर।
उत्तम शौच धरम अपनाकर।।
कर्म नाश करने, सुख प्राप्त करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
केला अंगूर आदि फल लेकर।
करूँ शौच धर्म का अर्चन।।

मोक्ष प्राप्त करने, सिद्धि धाम वरने, चले आए-मंदिर में चले आए।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य बनाकर।
मैं चढ़ाऊँ ''चंदनामति'' आकर।।
गुण प्राप्त करने, सुखसार वरने, चले आए-मंदिर में चले आए।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
शांतिधारा करूँ जिनवर चरण में।
शांति प्राप्त हो जावे विश्वभर में।।
यही बात करने, मन को शांत करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।
करूँ पुष्पांजलि प्रभु पद में।
भरूँ गुणपुष्प होकर विनत मैं।।
मन का ताप हरने, मंत्र जाप करने, चले आए-मंदिर में चले आए।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (16 अर्घ्य)

–सोरठा छंद–

धर्म शौच जगमान्य, पूजन कर मन शुद्ध हो।
अर्घ्य चढ़ाऊँ आन, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।

इति मण्डलस्योपरि पंचमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा छंद–

देवों का सुख भोगकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।1।।

ॐ ह्रीं देवसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रीपद सुख भोगकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।2।।

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारायण पद प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।3।।

ॐ ह्रीं नारायणपदवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेवपद प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।4।।

ॐ ह्रीं कामदेवपदवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शजन्य सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।5।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियजन्यसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनजन्य सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।6।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजन्यसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणजन्य सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।7।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजन्यसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रजन्य सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।8।।

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रियजन्यसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।9।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियजन्यसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवाञ्छित सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।10।।

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितभोगवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय सु बल भी प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।11।।

ॐ ह्रीं कायसुखभोगवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन कंचन सुख प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।12।।

ॐ ह्रीं धनसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनिता सुख भी भोगकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।13।।

ॐ ह्रीं वनितासुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर सुत भी प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।14।।

ॐ ह्रीं पुत्रसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रातृप्रेम को प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।15।।

ॐ ह्रीं भ्रातृसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्र सुहितकर प्राप्तकर, इच्छा हुई न पूर्ण।
उस इच्छा को छोड़ अब, जजूँ शौच गुण पूर्ण।।16।।

ॐ ह्रीं मित्रसुखवाञ्छाविहीनशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

पुत्र मित्र वनितादिक सुख नश्वर सभी।
परिजन पुरजन स्वहित न कर सकते कभी।।
इसीलिए शाश्वत सुख की अब कामना।
प्रभु पूजन से आत्मशुद्धि की भावना।।1।।

ॐ ह्रीं सकलपरिजनसंबंधिसुखवाञ्छाविहीन उत्तमशौचधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज–जिस गली में..........

जिस गती में न उत्तम धरम मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।
जिस मती से धरम शौच पल ना सके,
उस मती को भी हे नाथ! पाना नहीं।।टेक.।।

हीरा सा यह मनुज तन मिला आज है।
लोभ में ही गया यदि तो क्या लाभ है।।
लोभ में ही गया यदि..........
जिस गती में धरम लाभ ना मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।।जिस....।।1।।

कुछ तो सीमा करो अपनी इच्छाओं की।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी निजात्मा में भी।।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी.............
लोभ का त्याग पूरा भी कर ना सको,
तो भी ज्यादा उसी में लुभाना नहीं।।जिस....।।2।।

लोभवश चक्रवर्ती नरक में गया।
भरत सम्राट् ने तज उसे शिव लहा।।
भरत सम्राट् ने तज...........
'चन्दनामति' जहाँ लक्ष्य की पूर्ति हो,
रत्नत्रय धारकर मुझको जाना वहीं।।जिस....।।3।।

नाथ! जयमाल में अर्घ्य अर्पित करूँ।
पाद कमलों में निज को समर्पित करूँ।।
पाद कमलों में................
पूज्य बनकर सदा पूज्य ही रह सकूँ।
पुनः संसार में गोते खाना नहीं।।जिस..............।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-7)

उत्तम संयम धर्म पूजा

–स्थापना –

तर्ज –सन्त साधू बनके.........

मिल गया मानव जनम, भव भव के पुण्य प्रताप से।
पाऊँ अब संयम रतन, फिर छूट जाऊँ पाप से।।

प्राणि संयम और इंद्रिय, भेद दो संयम के हैं।
शक्ति के अनुसार इनको, धार लूँ यह भाव है।।
तब ही छुट सकता है क्रम, संसार जो है अनादि से।
पाऊँ अब संयम रतन, फिर छूट जाऊँ पाप से।।1।।

धर्म संयम की करूँ, मैं अर्चना स्थापना।
धर्म संयम की करूँ, मैं वंदना आराधना।।
नाथ अब सद्बुद्धि दे दो, होवे द्वन्द्व समाप्त ये।
पाऊँ अब संयम रतन, फिर छूट जाऊँ पाप से।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज –जरा सामने तो........

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
गंगानदि का शीतल जल ले, जिन पद में त्रयधार करूँ।
जन्म जरा मृत्यू नश जावे, यही आस प्रभु पास करूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
मलयागिरि का चंदन घिसकर, जिनपद में चर्चन कर लूँ।
भव-भव का आतम नश जावे, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
शालिपुंज ले धवल अखण्डित, प्रभु सम्मुख अर्पण कर दूँ।
अक्षयपद मिल जावे मुझको, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
बेला चंपक और चमेली, पुष्पों से पूजन कर लूँ।
कामबाण नश जावे मेरा, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
मालपुआ रसगुल्ला आदिक, व्यंजन से पूजन कर लूँ।
क्षुधारोग नश जावे मेरा, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले, जिनवर की आरति कर लूँ।
मोह तिमिर नश जावे मेरा, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
धूप दशांगी ले करके मैं, अग्नि माँहि अर्पण कर दूँ।
अष्टकर्म नश जाएं मेरे, उत्तम संयम मन धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
श्रीफल और बदाम सुपारी, फल प्रभु पद अर्पण कर दूँ।
मोक्ष महाफल मिल जावे, उत्तम संयम मन में धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
अर्घ्य थाल ''चंदनामती'' जिन चरणों में अर्पण कर दूँ।
पद अनर्घ्य मिल जाय मुझे, उत्तम संयम मन में धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
स्वर्ण कलश में जल ले करके, मैं शांतीधारा कर लूँ।
सारे जग की शांति हेतु, उत्तम संयम मन में धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।10।।

शांतये शांतिधारा।

उत्तम संयम धरम की अर्चना, करे भव्यों को भव से पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।
तरह-तरह के पुष्प मंगाकर, पुष्पांजलि अर्पण कर दूँ।
जग में शांति सुरभि फैले, उत्तम संयम मन में धर लूँ।।
बहे आतम में ज्ञानरस धार है, धर्म संयम से हो बेड़ा पार है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, बिना संयम के सब निस्सार है।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (21 अर्घ्य)

—दोहा—

संयम धारण कर मनुज, होते त्रिभुवन पूज्य ।
उसकी पूजन हेतु हम, लेकर आये पुष्प।।

इति मण्डलस्योपरि षष्ठवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

—सखी छंद—

षट्काय में पंच स्थावर, में पहला पृथिवीकायिक।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।1।।

ॐ ह्रीं पृथिवीकायिकजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्काय में पंच स्थावर, में दूजा है जलकायिक।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायिकजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्काय में पंच स्थावर, में तीजा अग्नीकायिक।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।3।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्काय में पंच स्थावर, में चौथा वायूकायिक।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्काय में पंच स्थावर, पंचम है वनस्पतिकायिक।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।5।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इंद्रिय जीव कहे जो, लट जोंक आदि में रहें जो।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।6।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय इन्द्रिय चींटी खटमल, आदिक हैं जीव धरें तन।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।7।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ इंद्रिय जीव कहे जो, मक्खी मच्छर आदिक वो।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।8।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय जीव असंज्ञी, मन रहित उठाते दुख ही।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।9।।

ॐ ह्रीं असंज्ञीपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर-नारक आदि कहे जो, तिर्यंच देव संज्ञी वो।
उनकी नित रक्षा करना, उत्तम संयम चित धरना।।10।।

ॐ ह्रीं संज्ञीपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन इन्द्रिय का सुख, है क्षणिक वही देता दुख।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय से सुख मिलता, है स्वाद क्षणिक ही उसका।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।12।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय की प्रकृती है, चाहे सुगंध वस्तू है।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु है रूप निरखते, सुंदर वस्तू ही परखते।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षुइन्द्रियविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रेन्द्रिय सुने वचन को, नहिं चाहे कुटिल श्रवण वो।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।15।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मर्कट सम चंचल है, इससे संसार विकल है।
उसको अनुशासित करना, उत्तम संयम चित धरना।।16।।

ॐ ह्रीं मनविषयवर्जनरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे तैसे समताधर, सामायिक करी क्षमा धर।
अब आर्तध्यान को त्यागूँ, संयम में हृदय जगा लूँ।।17।।

ॐ ह्रीं सामायिकरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणुव्रत या महाव्रतों में, कोई भी दोष लगे हों।
उनका प्रायश्चित्त लेकर, उत्तम संयम पूजूँ अब।।18।।

ॐ ह्रीं छेदोपस्थापनारूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मुनि के गमन समय भी, नहिं संभव दोष लगे भी।
उनका परिहार विशुद्धी, संयम मैं जजूँ विशुद्धी।।19।।

ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धिरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूक्ष्म सांपरायिक है, संयम मुनि में उपजत है।
इस संयम संयुत मुनि को, मैं जजूँ धर्म संयम को।।20।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो यथाख्यात संयम है, उसमें न मोहयुत मन है।
इस संयम धारक मुनि को, मैं जजूँ धर्म संयम को।।21।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरूप संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

संयम के ये भेद बहुत से जानिये।
शिवपथदर्शक संयमधर्म बखानिये।।
उत्तम संयम मुनिवर में ही मानिये।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय नियम कुछ ठानिये।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज –बाबुल की दुआएँ.......

उत्तम संयम की पूजन से, मानव को शिव का द्वार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।टेक.।।

पारसमणि को पाना जैसे, दुर्लभ ही नहीं अतिदुर्लभ है।
वैसे ही संयमरूपी मणि को, पाना भी अति दुर्लभ है।।
यदि मिल जावे वह रत्न तो समझो, मोक्षपंथ साकार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।1।।

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम से, संयम द्वैविध माना है।
इनका पालन करने वालों को, शिवपद निश्चित पाना है।।
श्रावक को भी किंचित् संयम, पालन से सुख आधार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।2।।

यदि संयम पालन कर न सको, निंदा न संयमी की करना।
उनकी पूजन आहार आदि से, निज आतम शुद्धी करना।।
''चन्दनामती'' संयम व संयमी, में ही सुख का सार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।3।।

हम इसीलिए आठों द्रव्यों का, थाल सजाकर लाए हैं।
जयमाला पढ़कर संयम का, अनुमोदन करने आए हैं।।
पूर्णार्घ्य समर्पण करके प्रभु, चाहूँ संयम का द्वार खुले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-8)

उन्तम तप धर्म पूजा

तर्ज –ए री छोरी बांगड़ वाली..............

उत्तम तपो धर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।टेक.।।

अंतरंग बहिरंग तपों से युक्त मुनीजन रहते हैं-2।
श्रावक भी आंशिक तप करते, जो उनको हितकारी है।।उत्तम तपो.।।1।।

उस तपधर्म की पूजन हेतू स्थापन यहाँ करना है-2।
आह्वानन स्थापन सन्निधि-करण विधी हितकारी है।।उत्तम तपो.।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम तपोधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम तपोधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम तपोधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
क्षीरोदधि के जल से प्रभु पद, में जलधारा करना है-2।
जन्म जरा मृत्यू नाशन हित, तपो धर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
केशर में कर्पूर मिलाकर, जिनपद चर्चन करना है-2।
भव आतप के नाशन हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
वासमती तंदुल लेकर के, अक्षत पुंज चढ़ाना है-2।
अक्षय पद की प्राप्ती हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
जुही चमेली आदि पुष्प की, माल प्रभू को चढ़ाना है-2।
कामबाण विध्वंसन हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
खुरमा गुझिया और समोसे, का नैवेद्य चढ़ाना है-2।
क्षुधारोग विध्वंसन हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
जगमग जगमग घृत दीपक ले, आरति प्रभु की करना है-2।
मोह तिमिर विध्वंसन हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
अष्टगंध की शुद्ध धूप, अग्नी में ज्वालन करना है-2।
अष्टकर्म विध्वंसन हेतू, तपोधर्म हितकारी है।। उत्तम तपो.।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
एला केला आदि फलों का, थाल प्रभू को चढ़ाना है-2।
मोक्षमहाफल प्राप्ती हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
अष्टद्रव्य का अर्घ्य चन्दना-मती प्रभू को चढ़ाना है-2।
पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
जल की झारी के द्वारा, अब शांतीधारा करना है-2।
आत्म शांति अरु विश्वशांति हित, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।10।।

शांतये शांतिधारा।

उत्तम तपोधर्म की पूजा, भव्यों को सुखकारी है-2।।
अंजलि में पुष्पों को भरकर, पुष्पांजलि अब करना है-2।
जग को सुरभित करने हेतू, तपोधर्म हितकारी है।।उत्तम तपो.।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (23 अर्घ्य)

—दोहा—

दशधर्मों के मध्य ही, है उत्तम तप धर्म।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जानूँ तप का मर्म।।

इति मण्डलस्योपरि सप्तमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

—अडिल्ल छंद—

द्वादश विध तप कहा जैन सिद्धांत में।
मुनि-श्रावक दोनों कर हरते पाप हैं।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं द्वादशविध उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रेसठ गुणयुत जिनगुणसम्पति व्रत कहा।
भिन्न-भिन्न तिथि में करते जो तप यहाँ।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के इक सौ अड़तालिस भेद हैं।
कर्मदहन व्रत से हो कर्मन छेद है।।

उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं कर्मदहनव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासिंहनिष्क्रीडित इक व्रत है कहा।
इक सौ पैंतालिस उपवास सहित महा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं महासिंहनिष्क्रीडितव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघू सिंहनिष्क्रीडित भी इक व्रत कहा।
साठ उपास सहित यह तप उत्तम महा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं लघुसिंहनिष्क्रीडितव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा सर्वतोभद्र नाम का व्रत कहा।
इक सौ छियानवे उपवासों से युत रहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं महासर्वतोभद्र व्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघू सर्वतोभद्र नाम का व्रत कहा।
पचहत्तर उपवास व अनशनयुत रहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं लघुसर्वतोभद्रव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावलि व्रत में पच्चिस उपवास हैं।
चौंतिस दिन में नौ पारणा विख्यात हैं।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं मुक्तावलीव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकावलि व्रत की विधि आगम में कही।
इसको करने वाले लें सुख की मही।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं कनकावलीव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर द्वारा कथित एक आचाम्ल तप।
इक सौ उन्निस दिन का माना है यह व्रत।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।10।।

ॐ ह्रीं आचाम्लतपसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सुदर्शन व्रत अड़तालिस दिवस का।
चौबिस हैं उपवास पारणा चौबिस का।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।11।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनव्रतसहित उत्तमतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य तपों में अनशन पहला तप कहा।
उपवासादिक करने वाला व्रत कहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अनशनतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवमौदर्य नाम का दूजा तप कहा।
भूख से कम खाने वाला यह व्रत रहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।13।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय बाह्य तप वृत्तपरीसंख्यान है।
लेय प्रतिज्ञा करें जो भोजन पान है।।

उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।14।।

ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यानतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस परित्याग नाम का चौथा तप कहा।
इक दो रस का त्याग करें भोजन सदा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।15।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्त शय्यासन पंचम तप ख्यात है।
मुनिगण भूपर शयन करें विख्यात हैं।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।16।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश है छठा भेद तप का कहा।
मुनिगण आतमशुद्धि हेतु इसको लहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।17।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तरंग तप के छह भेदों में प्रथम।
प्रायश्चित्त नाम से आगम में कथन।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।18।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय नाम का दूजा तप विख्यात है।
पूज्यजनों की विनय में हो विश्वास है।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।19।।

ॐ ह्रीं विनयतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्य नाम का तीजा तप कहा।
भीम ने अतिशयशक्ति इसी तप से लहा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।20।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्त्यतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चतुर्थ स्वाध्याय नाम से है कहा।
सत् शास्त्रों का अध्यन मनन सुखद महा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।21।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम तप व्युत्सर्ग नाम से मान्य है।
काय ममत्व रहित यतियों को प्रणाम है।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।22।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान नाम का छठा अंतरंग तप कहा।
धर्म शुक्लमय ध्यान करें मुनिजन महा।।
उत्तम तप को अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ।
इस तप के धारक मुनियों को मैं भजूँ।।23।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

उत्तम तप बारह भेदों से युक्त है।
अधिकाधिक व्रत कर होते जो मुक्त हैं।।
उस तप धर्म को महा अर्घ्य अर्पण करूँ।
निज आतम को तप करके कुन्दन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज–हम लाए हैं तूफान से.........

हे वीतराग प्रभु! मुझे तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या न कर सकूँ भक्ति दीजिए।।टेक.।।
विपरीत अर्थ करके तप का पतित हो गया।
मैं क्षणिक सुख को भोगकर उसमें ही खो गया।।
हे नाथ! इन दुखों से मुझको मुक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।1।।
कन्या अनंगशरा ने तप किया था वनों में।
बन करके विशल्या दिखाई शक्ति क्षणों में।।
हे नाथ! मुझे भी वही तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।2।।
उत्तम तपो धरम से मुनी मोक्ष जाते हैं।
श्रावक भी करें तप यदी तो स्वर्ग पाते हैं।।
प्रभु! 'चन्दनामती' मुझे भी युक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।3।।
पूर्णार्घ्य थाल सजा हम चढ़ाने आए हैं।
जयमाल में तप के गुणों को गाने आए हैं।।
पूजा तपो धरम की करूँ, शक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ, भक्ति दीजिए।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-9)

उत्तम त्याग धर्म पूजा

तर्ज –जरा सामने तो आओ.........

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।टेक.।।

चार प्रकार के दान को दे, श्रावक इसका पालन करते।
रत्नत्रय का दान मुनीजन, दे इसको धारण करते।।
आह्वानन करूँ स्थापना, पूजन की प्रथम पहचान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

प्रासुक जल लेकर झारी में, प्रभु पद में जलधार करूँ।
जन्म जरा मृत्यू नश जावे, त्याग को मैं स्वीकार करूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

मलयागिरि का चंदन लेकर, प्रभु पद में चर्चन कर लूँ।
भव आतप नश जावे मेरा, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।

सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

धवल अखण्डित तंदुल लेकर, पुंज से प्रभु पूजन कर लूँ।
अक्षय पद मिल जावे मुझको, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

पुष्प सुगंधित ले हाथों में, प्रभु सम्मुख अर्पण कर दूँ।
विषय वासनाओं को तजकर, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

पूरणपोली खुरमे खाजे, लेकर प्रभु पूजन कर लूँ।
क्षुधारोग नश जावे मेरा, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

स्वर्ण थाल में दीपक लेकर, जिनवर की आरति कर लूँ।
मोहतिमिर नश जावे मेरा, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

अष्टगंध की धूप बनाकर, अग्नी में मैं दहन कर लूँ।
अष्टकर्म नश जावें मेरे, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

खट्टे-मीठे विविध फलों से, जिनवर की पूजन कर लूँ।
मोक्ष महाफल प्राप्त मुझे हो, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

अर्घ्य थाल ''चन्दनामती'', लेकर जिनवर पूजन कर लूँ।
पद अनर्घ्य मिल जावे मुझको, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

पावन जल से प्रभु चरणों में, शांतिधारा मैं कर लूँ।
आत्मशांति मिल जावे मुझको, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

करूँ त्याग धर्म की अर्चना, इसकी महिमा बड़ी ही महान है।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।

उपवन से फूलों को चुन-चुन, पुष्पांजलि अर्पण कर दूँ।
आत्मा गुण से सुरभित होवे, त्याग धर्म मन में धर लूँ।।
सब ममता व मोह को त्याग कर, इसे धारण करें इंसान हैं।
मुनि-श्रावक सभी इसे पालकर, बनते एक दिन भगवान हैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (10 अर्घ्य)

–दोहा–

त्यागधर्म की अर्चना, मुझको करे निहाल।
पुष्पांजलि कर वन्दना, करूँ प्रभो! नत भाल।।

इति मण्डलस्योपरि अष्टमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

तन ममत्व से जीव का, होता है अपकार।
आतम से ममता करो, तब होगा उद्धार।।
काया से ममता घटे, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।1।।

ॐ ह्रीं तनममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ की ममता जगत में, है सबसे विख्यात।
इससे भी दुख प्राप्त हो, कोई तात न मात।।

माता से ममता घटे, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।2।।

ॐ ह्रीं जननीममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पितृ मोह से विकल हो, मन में अति संताप।
इससे अति दुख प्राप्त हो, बहुत बनाये तात।।
ममता पितु से यदि घटे, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।3।।

ॐ ह्रीं पितृममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र मोह बेड़ी सदृश, इस सम कोई न राग।
इससे अति दुख प्राप्त हो, कैसे हो वैराग।।
पुत्र से ममता यदि घटे, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।4।।

ॐ ह्रीं पुत्रममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़े भाग्य से राज्य की, मिली संपदा आन।
उसमें रमकर आत्म की, कर न सका पहचान।।
राज्य मोह को त्यागकर, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।5।।

ॐ ह्रीं राज्यममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन कन कंचन आदि का, मोह पाप की खान।
चपला इनको जान कर भी, छुटता नहिं अज्ञान।।
इनसे ममता को घटा, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।6।।

ॐ ह्रीं धनादिममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस छ्यानवे रानियाँ, तजी गये वनराय।
चक्रवर्ति सम मोह तज, कैसे करूँ उपाय।।

तिरिया मोह का त्याग कर, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।7।।

ॐ ह्रीं स्त्रीममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह कुटुम्ब मेला यहाँ, समझो मैं हूँ यात्रि।
उसको निज गृह मानकर, छुटती ममता नाहिं।।
सांकल जान इसे तजूँ, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।8।।

ॐ ह्रीं गृहकुटुम्बममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस संसार में है प्रमुख, मिथ्या भाव कषाय।
इससे कर्म बंधे सतत, कैसे करूँ उपाय।।
इस कषाय को त्याग कर, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।9।।

ॐ ह्रीं कषायभावत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ राग वहाँ द्वेष भी, निश्चित मानो बात।
इसी राग अरु द्वेष में, जीव भ्रमे दिन रात।।
इन भावों को छोड़कर, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।10।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषभावत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

मातपिता सुत नारि का, है ममत्व दुख काज।
राग द्वेष इनमें किया, तभी मिला सुख नाहिं।।
इन सबकी ममता तजूँ, करूँ त्याग स्वीकार।
अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, होने को भवपार।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वप्रकार ममत्वत्यागरूपउत्तमत्यागधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज–तुमसे मिलने को.............

त्याग लेने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।टेक.।।

भ्रान्तिवश मैंने शुभ कर्म को तज दिया।
विषय भोगों में ही अपना मन कर लिया।
उसे तजने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।1।।

त्याग की महिमा अब मैंने जानी प्रभो।
दान की गरिमा अब मैंने मानी प्रभो।।
दान देने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।2।।

देना आहार औषधि अभयदान भी।
ज्ञान का दान दे तजना अज्ञान भी।।
ज्ञान लेने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।3।।

साधु ही त्याग उत्तम धरम पालते।
आज भी वे परम शांति को धारते।।
शांति पाने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।4।।

दान देकर के श्रावक जनम धन्य हो।
''चन्दनामति'' मेरा मन भी धन धन्य हो।।
सुरभि लेने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।5।।

अष्टद्रव्यों का पूर्णार्घ्य ले आया मैं।
नाथ! जयमाल पढ़ शांति को पाया मैं।
गुण गाने का मन करता है।
हे प्रभो! तेरी पूजन का मन करता है।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-10)

उत्तम आकिञ्चन्य धर्म पूजा

तर्ज –पंखिड़ा तू उड़ के जाना...........

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
अर्चना................अर्चना.......।।टेक.।।

बाह्य-अंतरंग परिग्रह का त्याग इसमें हो।
साधु अरु गृहस्थ दोनों पाल सकते हैं इसको।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, धर्म की भक्ती।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।अर्चना...।।1।।

अर्चना में सबसे पहले मैं स्थापना करूँ।
सन्निधीकरण विधी के साथ वन्दना करूँ।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, धर्म की भक्ती।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।अर्चना.....।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्य धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्य धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
स्वर्ण के कलश से शुद्ध जल की धार करना है।
अपने जन्म जरा मृत्यु का विनाश करना है।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
प्रभु के चर्ण में सुगंध गंध को चढ़ाना है।
जग के ताप हरके मन की शांति को बढ़ाना है।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
वासमती चावलों के शुद्ध पुंज चढ़ाऊँ।
पद अखण्ड प्राप्ति हेतु मन को शुद्ध बनाऊँ।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
धर्म के बगीचे से गुणों के पुष्प लाऊँ मैं।
कामबाण नाश हेतु प्रभु के पद चढ़ाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
मिष्ट अन्नयुत व्यंजन बनाय के चढ़ाऊँ मैं।
क्षुधारोग हो विनाश आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
प्रभु की आरती करूँ सदा धरम को ध्याऊँ मैं।
मोह तिमिर को विनाश आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
धूप अग्नि में जलाय धूम्र को उड़ाऊँ मैं।
अष्टकर्म को विनाश आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
सेब संतरा अनार आदि फल चढ़ाऊँ मैं।
मोक्ष फल की प्राप्ति करके आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
अर्घ्य ''चंदनामती'' प्रभू के पद चढ़ाऊँ मैं।
हो अनर्घ्य पद की प्राप्ति आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना.....।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
शांतिधार हेतु क्षीरोदधि का नीर लाऊँ मैं।
विश्वशांति कामना है आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना....।।10।।

शांतये शांतिधारा।

अर्चना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।
वंदना करूँ मैं आकिञ्चन्य धर्म की।।
पुष्प लेके अंजुली में पुष्पांजलि चढ़ाऊँ मैं।
सुरभि जग में फैले और आत्मशांति पाऊँ मैं।।
पूजा करूँ, भक्ति करूँ, वंदना करूँ।
आकिञ्चन्य धर्म की मैं अर्चना करूँ।।अर्चना...।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (15 अर्घ्य)

–सोरठा–

परिग्रह त्यागी ही, आकिञ्चन्य धरम धरें।
पुष्पांजलि करके, हम इसकी पूजन करें।।

इति मण्डलस्योपरि नवमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौपाई छंद–

जग अनित्य है सर्व प्रकारा, इसमें नहिं किञ्चित् सुख सारा।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।1।।

ॐ ह्रीं अनित्यभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरण जगत में है नहिं कोई, मंत्र तंत्र से बचे न कोई।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।2।।

ॐ ह्रीं अशरणभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच प्रकार कहा संसारा, जीव चतुर्गति भ्रमे अपारा।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।3।।
ॐ ह्रीं संसारभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सब एकाकी आते, मरण समय कोई संग न जाते।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।4।।
ॐ ह्रीं एकत्वभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर क्षीर सम भेद ज्ञान जो, धरें बनें निर्ग्रन्थ साधु वो।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।5।।
ॐ ह्रीं अन्यत्वभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तधातुमय देह अशुचि है, होती रत्नत्रय से शुचि है।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।6।।
ॐ ह्रीं अशुचिभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा में मन वचन काय से, आश्रव हों शुभ-अशुभ भाव से।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।7।।
ॐ ह्रीं आस्रवभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा में जप-तप प्रभाव से, रुके कर्म संवर प्रभाव से।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।8।।
ॐ ह्रीं संवरभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय हो जो झड़ जावें, वह निर्जरा द्विविध कहलावे।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।9।।
ॐ ह्रीं निर्जराभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में अनादिकाल से, जीव भ्रमें निज कर्म भाव से।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।10।।
ॐ ह्रीं लोकभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुछ सुलभ जगत में जानो, दुर्लभ बोधिलाभ को मानो।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।11।।
ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष अरु चिंतामणि सम, धर्म से ही फल पा सकते हम।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।12।।
ॐ ह्रीं धर्मभावनारूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात-पिता सुत वनितादिक सब, चेतन परिग्रह हैं दुखदायक।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।13।।
ॐ ह्रीं चेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न राज्य धन महल आदि सब, कहें अचेतन परिग्रह दुखप्रद।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।14।।
ॐ ह्रीं अचेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेष भावों की परिणति, अंतरंग परिग्रह दें दुर्गति।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।15।।
ॐ ह्रीं अंतरंगपरिग्रहत्यागरूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

अंतर बाहिर सब परिग्रह तज, नग्नरूप धारें मुनिवर सब।
यह चिंतन कर राग घटाओ, आकिञ्चन्य धर्म को ध्याओ।।16।।
ॐ ह्रीं विविधपरिग्रहत्यागरूपउत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज –तुमसे लागी लगन.........

धर अकिंचन धरम, कर ले तू शुभ करम, भव्य प्राणी,
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।टेक.।।
ना मे किंचन अकिंचन धरम है, पर को निज मानना ही भरम है।
तज दे मिथ्या भरम, पाल ले दश धरम, भव्य प्राणी।
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।1।।

पांच पापों में भी परिग्रह इक है, इसको मुनिवर न धरते तनिक हैं।
उनके पद में नमन, करके पावन हो मन, भव्य प्राणी,
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।2।।

इसका कुछ त्याग श्रावक भी करते, पांच अणुव्रत का पालन जो करते।
अणुव्रतों का कथन, जिनवरों का वचन, भव्य प्राणी,
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।3।।

व्रत सहित श्रेष्ठ मानव जनम है, व्रत रहित मन को रखना न तुम है।
व्रत से शिक्षा लें हम, ''चन्दना'' सुधरे मन, भव्य प्राणी,
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।4।।

पूजा के बाद जयमाल गाई, अर्घ्य की थाली मैंने सजाई।
अर्पें पूर्णार्घ्य हम, पायें पूजन का फल, भव्य प्राणी,
पूजा से धन्य हो जिन्दगानी।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिञ्चन्यधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

(पूजा नं.-11)

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजा

तर्ज –सोनागिरि में सोना................

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य व्रत की..........।।टेक.।।

ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा को आए हम।
आह्वान अरु स्थापना के भाव लाए हम।।
सन्निधिकरण करके हृदय में धार लें इसको।
जीवनशिखर पर रत्न का कलशा चढ़ा समझो।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-सोनागिरि में...................

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

नीर गंगा का लिया जलधार करने को।
इसके निमित्त से आए हम भव पार करने को।।
हो जन्ममृत्यू नाश यह अरमान पूरिये।
आतमप्रभू की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।

इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

चंदन घिसा भरकर कटोरी पाद चर्चन को।
भव ताप नाशन हेतु जिनवर पाद अर्चन को।।
भवदाह होवे शांत यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

अक्षत लिया मुट्ठी में भरकर पुंज धरने को।
इसके निमित्त से पद अखण्डित प्राप्त करने को।।
मिल जावे अक्षय धाम यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।

उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

बेला चमेली आदि पुष्पों को लिया कर में।
निज कामबाण विनाश हेतू प्रभु को अर्पण है।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

नैवेद्य की थाली प्रभू पद में समर्पित है।
क्षुध रोग नाशन हेतु मन के भाव अर्पित हैं।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

दीपक जला प्रभु आरती का भाव मन आया।
हो मोहतम का नाश मन में आश भर लाया।।

मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

कृष्णागरु की धूप अग्नी में दहन किया।
हों अष्टकर्म विनाश ऐसा भाव मन किया।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

स्वादिष्ट फल का थाल प्रभु के पद समर्पित है।
शिवफल की आशा से विनय यह भाव अर्पित है।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

जल गंध अक्षत पुष्प चरु नैवेद्य आदिक हैं।
यह ''चन्दनामति'' अर्घ्य की थाली समर्पित है।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

कंचन कलश से प्रभु चरण त्रयधारा करना है।
जलधार करके आत्मा को शांत करना है।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

ब्रह्मचर्य की महिमा जग में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर-नारी हैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य को मुनिजन धारते, श्रावक शीलव्रती बन इसको पालते।
ब्रह्मचर्य...........

पुष्पों से पुष्पांजलि प्रभू के पद में करना है।
गुण की सुरभि फैले यहाँ पुरुषार्थ करना है।।
मिल जावे उत्तम सौख्य यह अरमान पूरिये।
आतम निधी की प्राप्ति का वरदान दीजिए।।
इसकी महिमा तीन लोक में न्यारी है।
इसकी पूजन करते सब नर नारी हैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (22 अर्घ्य)

–दोहा–

सहस चुरासी भेदयुत, शील धर्म बलवान।
इसकी पूजन हेतु अब, पुष्प चढ़ाऊँ आन।।

इति मण्डलस्योपरि दशमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शेरछंद–

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे नारियों के संग में विचरण नहीं करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं स्त्रीसहवासवर्जितउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
नारी के हाव भाव अंग आदि न निरखें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे राग भावयुक्त वचन भी न उच्चरें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं रागवचनवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे पूर्व के भोगों का नहीं स्मरण करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वभोगानुस्मरणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
षट्रस गरिष्ठ भोजन वे ग्रहण ना करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं वृष्येष्टरसवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
श्रृंगार तन का छोड़कर वैराग्य मन धरें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं स्वशरीरसंस्कारवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
नहिं नारियों की शय्या पर वे शयन करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं शय्यासनवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे कामकथाओं में रुचि कभी ना धरें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं कामकथावर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे भूख से भी कम सदा भोजन ग्रहण करें।।

इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं उदरपूर्णाशनवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
नव भेद शीलव्रत को वे धारण सदा करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं नवधाशीलपालनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे कामदेव शोषण तरुशीत सम करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं शोषणकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
संताप कामबाण कभी उनके ना रहे।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं संतापकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे कामबाण का ही उच्चाटन सदा करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं उच्चाटनकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे कामदेव को वशीकरण सदा करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं वशीकरणकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे कामदेव मोहन कर पाप से बचें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं मोहनकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे पंचबाण कामदेव से सदा डरें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे सुन्दरी को लख नहीं पुलकित हुआ करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।17।।

ॐ ह्रीं पुलकितभावयुक्तकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे सुन्दरी का रूप अवलोकन भी ना करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं अवलोकनकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे हास्य वचन से प्रिया सन्तुष्ट ना करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।19।।

ॐ ह्रीं हास्यकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे अन्य चेष्टाओं से तिरिया न वश करें।।

इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं इंगितचेष्टावर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे प्राणघातयुक्त कामबाण को तजें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।21।।

ॐ ह्रीं मारणकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्मचर्य धर्म का पालन सदा करें।
वे दश प्रकार कामबाण नाश भी करें।।
इस ब्रह्मचर्य धर्म को मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आत्मा में रमण की सदैव भावना भाऊँ।।22।।

ॐ ह्रीं दशविधकामबाणवर्जनउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

जो पूर्ण शुद्धि सहित ब्रह्मचर्य को धरें।
वे आत्मा की पूर्ण शुद्धि को वरण करें।।
मैं पूर्ण अर्घ्य लेके ब्रह्मचर्य को जजूँ।
आत्मा में रमण करने हेतु नाथ को भजूँ।।23।।

ॐ ह्रीं शुद्धब्रह्मचर्यधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय नमः।**

जयमाला

तर्ज – दीदी तेरा.........

ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।
झुकता उसके आगे जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।टेक.।।

जो विषयों का त्यागी है आत्मा का रागी, वही ब्रह्मचर्य सहित है विरागी
महासाधुगण की निधी यह धरोहर, वही इसके बल पर बनें वीतरागी।
उनको जग ने पावन है माना, हे नाथ! कठिन है उसे पाना।।1।।

सती सीता ने इसका कुछ अंश पाला, हुई शीलव्रत की परीक्षा विशाला।
बनी जल की सरिता वो अग्नी की ज्वाला, सुदर्शन का भी व्रत ने उपसर्ग टाला।
उनकी जय से गूंजा जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।2।।

मुझे भी प्रभो! इसका पालन करा दो, मेरी आतमा को भी पावन बना दो।
विषयों से मुझको विरागी बना दो, मुझे 'चन्दना' आत्मस्वादी बना दो।
जिससे हो ना भव भव में आना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।3।।

जयमाला में अर्घ्य का थाल लाके, चढ़ाऊँ प्रभू पाद पूर्णार्घ्य आके।
भावों को भी अपने शुद्ध बनाके, करूँ ब्रह्मचर्य का पालन सदा मैं।
पूजन का फल मुझको है पाना, हे नाथ! कठिन है उसे पाना।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्यजन दशधर्म की, आराधना करें।
निज मन में धर्म धार वे, शिवसाधना करें।।
इस धर्म कल्पवृक्ष को, धारण जो करेंगे।
वे ''चंदनामती'' पुनः, भव में न भ्रमेंगे।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

समुच्चय जयमाला

तर्ज–सज धज कर जिस दिन...........

दशधर्मों की जयमाला हम, भक्ती से गाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, प्रभु को चढ़ाएंगे।।टेक.।।

उत्तम क्षमा से पर्व का, प्रारंभ होता है।
दश-दश दिनों तक धर्म ही आनंद देता है।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, प्रभु को चढ़ाएंगे।।1।।

उत्तम क्षमा से क्रोध कम हो धैर्य बढ़ता है।
मार्दव गुणों से जीव कोमल भाव करता है।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, प्रभु को चढ़ाएंगे।।2।।

आर्जव धरम ऋजुता सरलता को सिखाता है।
सच बोलकर संसार को सत्पथ दिखाता है।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, प्रभु को चढ़ाएंगे।।3।।

शुचिता को उत्तम शौच में पालन किया जाता।
संयम धरम से नर जनम सार्थक किया जाता।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा प्रभु को चढ़ाएंगे।।4।।

तप धर्म अन्तर-बाह्य तप करना सिखाता है।
चारों तरह का दान त्याग धरम में आता है।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा प्रभु को चढ़ाएंगे।।5।।

उत्तम आकिञ्चन धर्म परिग्रह को घटाता है।
शुभ ब्रह्मचर्य से मनुज आतम सुख पाता है।।
इन धर्मों की पूजन कर मन पावन बनाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा प्रभु को चढ़ाएंगे।।6।।

दश धर्म की सीढ़ी पे चढ़कर मोक्ष मिलता है।
संसार में भी ''चंदनामति'' सौख्य मिलता है।।
जयमाला के पूर्णार्घ्य में श्रीफल चढ़ाएंगे।
आठों द्रव्यों का थाल सजा प्रभु को चढ़ाएंगे।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग-आकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

तीर्थंकर श्री शांति-कुंथु-अरहनाथ प्रभू को करूँ नमन।
उनकी पावन जन्मभूमि, हस्तिनापुरी को है वन्दन।।
इसी भूमि पर निर्मित जम्बूद्वीप कृती को करूँ नमन।
उसकी सम्प्रेरिका ज्ञानमति, गणिनी माता को वन्दन।।1।।

वीर संवत् पच्चिस सौ पैंतिस, भादों वदि सप्तमि[1] तिथि में।
यह दशलक्षण का विधान लिख, पूर्ण किया उत्तम तिथि में।।
गणिनी ज्ञानमती की मैं, आर्यिका चन्दनामति शिष्या।
गुरु माँ की प्रेरणा प्राप्तकर, उनसे ली मैंने दीक्षा।।2।।

चारितचक्री शांतिसिंधु की, परम्परा निर्दोष कही।
पुण्ययोग से उस उपवन की, मैं भी कलिका एक हुई।।
दश धर्मों का रूप हृदय में, मेरे भी प्रगटित होवे।
इसी भाव से इस विधान को, करो सभी प्रमुदित होके।।3।।

चैत्र-भाद्रपद-माघ माह में, शुक्ल पंचमी से चौदश।
दश दिन तक दशलक्षण का शुभ, पर्व मनाते हैं श्रावक।।
यह अनादिकालीन पर्व नहिं, कभी अंत होगा इसका।
जैसे सृष्टि अनादि तथा, जिनधर्म अनादिनिधन रहता।।4।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में, गुरु सन्निध में रचा इसे।
शांतिनाथ का गर्भकल्याणक, भादों वदि सप्तमि तिथि में।।
जो कुछ इसमें भूल चूक हो, सुधी सुधार पढ़ें इसको।
धर्म सभी के बसे हृदय में, यही भाव है बस मुझको।।5।।

1. 13 अगस्त 2009

आरती दशलक्षण धर्म की

तर्ज–अरे रे..............

आरती थाल सजा के, रत्न का दीप जला के,
आरती करूँ मैं जिनराज की।।

दश-दशधर्म उत्तम क्षमा आदि हैं, जिनका पालन करते महामुनि आदि हैं।
थोड़ा-थोड़ा भी जो पालन करें आज हैं, वे भी प्राप्त करें क्रम से मुक्ति राज्य हैं।।
आरती थाल सजा के, रत्न का दीप जला के।। टेक.।।

क्रोध को घटा के क्षमा भाव रखना है, मान को हटाके मृदु भाव करना है।
छोड़ दें कुटिलता तो ऋजु भाव हों, सत्यता को पालें सदा झूठ त्याग हो।।
आरती थाल सजा के,......।।1।।

लोभ को हटाके शौच धर्म पलेगा, संयमी के द्वारा संयम धर्म चलेगा।
थोड़ा नियम लेके जो भी तप करेगा, वही उत्तम त्याग धर्म धारण करेगा।।
आरती थाल सजा के,......।।2।।

परिग्रह का त्याग आकिंचन्य धर्म है, आत्मा में रमण उत्तम ब्रह्मचर्य है।
''चंदनामती'' जो इनसे सहित होते हैं, उनकी आरती से सभी पाप धोते हैं।।
आरती थाल सजा के,......।।3।।